एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गोंदा की उन्नत खेती

(*मुकेश चंद भठेश्वर)
उद्यान विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान-303329
*संवादी लेखक का ईमेल पता: mukeshchandbhateshwar@gmail.com

गोंदा (लसोड़ा) (*कॉर्डिया मिक्सा*) एक मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष है, जो मुख्य रूप से भारत, पाकिस्तान और अन्य एशियाई देशों में पाया जाता है। इसे कई क्षेत्रों में गोंदी के नाम से भी जाना जाता है। लसोड़ा के पेड़ का महत्व इसके औषधीय, पोषण और व्यावसायिक उपयोगों के कारण बढ़ जाता है। इसके फल छोटे, गोल और चिपचिपे होते हैं, जिनका उपयोग अचार, चटनी और पारंपरिक चिकित्सा में किया जाता है। गोंदा का पेड़ शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में अच्छी तरह से बढ़ता है और इसकी खेती मुख्य रूप से राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में की जाती है। यह पेड़ भूमि की उर्वरता को बनाए रखने में भी सहायक होता है और इसे पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण माना जाता है। गोंदा के फल विटामिन सी से भरपूर होते हैं, जो इसे एक पौष्टिक फल बनाते हैं। इसके अलावा, इसकी छाल और पत्तों का उपयोग विभिन्न औषधीय प्रयोजनों के लिए किया जाता है, जैसे कि खांसी, दमा और त्वचा संबंधी रोगों में।

जलवायु और भूमि

लसोड़ा की खेती के लिए शुष्क और अर्ध–शुष्क जलवायु सर्वोत्तम मानी जाती है। यह पेड़ उच्च तापमान और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी अच्छी तरह से बढ़ता है। इसकी खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है, लेकिन यह अन्य प्रकार की मिट्टियों में भी उगाया जा सकता है, यदि जल निकासी अच्छी हो।

उन्नत किस्में

गोंदा की कई उन्नत किस्में उपलब्ध हैं, जो उत्पादन और गुणवत्ता दोनों में बेहतर होती हैं। इन किस्मों का चयन स्थानीय जलवायु और मिट्टी की स्थिति के अनुसार किया जाना चाहिए। कुछ प्रमुख उन्नत किस्में निम्नलिखित हैं जी–1 जी–2 थार लसोड़ा – यह किस्म राजस्थान में लोकप्रिय है और बेहतर उत्पादन देती है। पुष्कर लोकल, पारस गोण्डा एवं कर्ण लसोड़ा –जोबनेर सेंटर द्वारा विकसित किस्म।

कर्ण लसोड़ा

पौध रोपण

लसोड़ा के पौधों की रोपाई के लिए मानसून का समय सबसे अच्छा होता है। पौधों को तैयार करने के लिए बीजों को नर्सरी में बोया जाता है और 4–6 माह में ये पौधे खेत में रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं। पौधों के बीच 8 X 8 मीटर की दूरी रखनी चाहिए ताकि उन्हें पर्याप्त स्थान और पोषक तत्व मिल सकें।

सिंचाई

गोंदा की सिंचाई व्यवस्था मिट्टी की नमी और वर्षा पर निर्भर करती है। शुरुआत में पौधों को नियमित रूप से पानी की आवश्यकता होती है, लेकिन एक बार पेड़ स्थापित हो जाने के बाद इसकी सिंचाई आवश्यकता कम हो जाती है। शुष्क मौसम में हल्की सिंचाई जरूरी होती है, खासकर फल बनने के समय।

खाद और उर्वरक

गोंदा की अच्छी पैदावार के लिए जैविक और रासायनिक खादों का उपयोग किया जा सकता है। गड्ढों में पौधों की रोपाई के समय गोबर की खाद मिलाना फायदेमंद होता है। इसके अलावा, प्रति पौधा 50–60 ग्राम नाइट्रोजन, 30–40 ग्राम फास्फोरस और 20–30 ग्राम पोटाश प्रति वर्ष डालना चाहिए।

देखभाल और रोग प्रबंधन

गोंदा की उन्नत खेती में पौधों की नियमित देखभाल और रोग प्रबंधन जरूरी है। इसमें मुख्य रूप से दीमक, कीट और फफूंदी से बचाव के उपाय किए जाते हैं। इसके लिए जैविक कीटनाशकों का उपयोग प्रभावी हो सकता है। पौधों के आसपास की खरपतवारों को हटाना भी जरूरी होता है ताकि पौधों को उचित पोषण मिल सके।

कटाई और उत्पादन

गोंदा के फल आमतौर पर 2–3 साल में आना शुरू हो जाते हैं, और प्रति पेड़ लगभग 20–25 किलो फल प्राप्त हो सकते हैं। फलों को पकने के बाद हाथों से तोड़ा जाता है और फिर इसे सुखाकर या अचार के रूप में संरक्षित किया जाता है।

बाजार और उपयोग

गोंदा के फलों की बाजार में अच्छी मांग होती है। इसके अलावा, लसोड़ा के पत्तों और छाल का भी औषधीय उपयोग किया जाता है। इसके अचार और चटनी को स्थानीय बाजारों में बेचा जा सकता है, जिससे किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।

निष्कर्ष

गोंदा की उन्नत खेती से किसानों को बेहतर उत्पादन और लाभ प्राप्त हो सकता है। सही किस्म, समय पर देखभाल, सिंचाई और उर्वरक का उपयोग करके इसकी खेती को और अधिक लाभदायक बनाया जा सकता है। इससे न केवल किसानों की आय में वृद्धि होगी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।